चतुस्त्रिंशत्तमः प्रकाशः

(हनुमन्मन्त्रकथनम्) श्रीदेव्युवाच

ब्रूह्येकादशरुद्रस्य मन्त्रान् हनुमतो मम । राक्षसा निहता येन त्वत्तो लब्धवरा अपि ॥१॥

श्रीदेवी ने कहा—हे देव! अब राक्षसों का विनाश करने वाले एवं स्वयं आपसे वर प्राप्त करने वाले एकादश रुद्र हनुमान् के मन्त्रों को मुझसे कहें॥१॥

श्रीशिव उवाच

वक्ष्यामि तव देवेशि मन्त्रान् हनूमतस्त्विह। चातुर्युगान्तानाकल्पसंस्थितान् सिद्धिदायकान्॥२॥

श्रीशिव ने कहा—हे देवेशि! अब मैं यहाँ तुम्हारे लिये हनुमान् के मन्त्रों को कहता हूँ, जो चार युगों वाली इस सृष्टि में प्रलय-पर्यन्त विद्यमान हैं एवं सिद्धि प्रदान करने वाले हैं।।२।।

हनुमन्मालामन्त्रकथनम्

तत्रादौ कथयिष्यामि मालामन्त्रं महाफलम्। तारं च वाग्भवं लक्ष्मीं हीं हीं हुं च समुच्चरेत्॥३॥ बिन्दुरुद्रस्वरान्वितै:। आद्यन्ताकृतिवेदार्णं हनुमतस्त्वाद्यकूटमेतत्साधक उच्चरेत्। प्रकृत्याकृतिवेदाणैर्बिन्दुरुद्रस्वरान्वितैः 11811 द्वितीयकूटमेतत् स्यादाद्यन्तकृतवर्णकै:॥५॥ विसर्गेन्द्रस्वरोपेतैस्तृतीयं कुटमुच्यते। आद्यन्तसिद्धाकृत्यब्धिवर्णेरीशस्वरान्वितैः 11511 सानुस्वारैस्तुर्यकूटं ससाध्यै: पञ्चमं मतम्। नमो हनुमते प्रकटेति पराक्रम ॥७॥ आक्रान्तदिङ्मण्डलयशोवितानधवेति लीकृतजगत्रितय वज्रदेह ज्वलेति च ॥८॥ दग्निसूर्येति कोटीति सूप्रभतनूरुह । रुद्रावतार लंकेति पुरीदहन संवदेत् ॥९॥

उद्धिलङ्घन दश प्रोच्य चाथ शिरः कृतान्। तक सीताश्चासनेति वदेद्वायुसुतेति च ॥१०॥ अञ्जनीगर्भसम्भूत श्रीरामलक्ष्मणा वदेत्। नन्दकर कपिसैन्यप्राकति ततो वदेत् ॥११॥ सुग्रीवसख्यकारेति णेति वालिनिबर्हण। कारणद्रोणपर्वेति तोत्पाटनपदं वदेत् ॥१२॥ अशोकवनमित्युक्त्वा दारणेति पदं वदेत्। अक्षकुमारकच्छेति दहनेति पदं ततः ॥१३॥ रक्षोवरसमूहेति विभेदनपदं वदेत्। ब्रह्मास्त्रेति ब्रह्मशक्तियहमुक्त्वा च लक्ष्मण ॥१४॥ शक्तिभेदविदारेति ण विशल्योषधीति च। समानयन बालेति संवदेद्धानुमण्डल ॥१५॥ यसनोयमेघनादहोमविध्वंसनेति च। इन्द्रजिद्वधकारेति णेति सीतेति रञ्जक ॥१६॥ राक्षसीसङ्घवीथ्यन्ते दारणेति वदेत्पदम्। कुम्भकर्णादिवधकृत्परायणपदं वदेत् ॥१७॥ रामभक्ति तदित्युक्त्वा वदेत्परपदं ततः । समुद्रव्योमपदतः समुल्लङ्घन संवदेत् ॥१८॥ महासामर्थ्येति महातेजःपुञ्जविराजमा । न स्वामिवचनेत्युक्त्वा सम्पादितार्जनेति च ॥१९॥ संयुगेति सहायेति कुमारेति ग्रहा वदेत्। दीन्भीषय पदान्ते शब्दोदयपदं वदेत् ॥२०॥ दक्षिणाशेति मार्त्तण्डमेरुपर्वतवीथिका । चलेति सकलेत्युक्त्वा मन्त्रागपदतो वदेत् ॥२१॥ माचार्य मम सर्वग्रहविनाशन सर्व च। ज्वरोच्चाटन सर्वेति वदेच्च विघ्ननाशन ॥२२॥ सर्वापत्ति पदान्ते तु निवारणपदं वदेत्। सर्वदुष्टपदान्ते च निबर्हणपदं तथा ॥२३॥ सर्वव्याघ्रादिपदतो वदेद्धयनिवारण। सर्वशत्रुच्छेदनेति वदेन्मम परस्य च ॥२४॥

नपुंस्त्रीतिपदं वदेत्। त्रियुगेतिपदान्ते तु नपुंसकात्मकं सर्वान्ते वदेज्जीवंपदं ततः ॥२५॥ वदेत्। ममाज्ञाकारकं वशयद्वयमानय नानामुनिध्येय ततो वदेत् ॥२६॥ सम्पादयद्वयम् सर्वेति सम्प्रोच्य परिवारान्ममेति सेवकान्कुरुयुग्मं सर्वशस्त्रास्त्र संवदेत् ॥२७॥ च ह्रां विषान्विध्वंसयेति द्विरुक्त्वा त्रितयं वदेत्। पाहि पाहीति प्रागुक्तं कूटपञ्चकम् ॥२८॥ विलोमेन वदेत्सर्वं सर्वशत्रुहरं परम्। क्षोभयद्वितयं परसैन्यानि मम ॥२९॥ सर्वकार्यजातमिति साधयद्वितयं सर्वदुष्टदुर्जनेति मुख्यानि कीलयद्वयम् ॥३०॥ ह्रांत्रयं त्रीन्ह्रीं हुंफट्त्रयं चाग्निगेहिनी। हनुमतो नागनागशराक्षर: ॥३१॥

उनमें से सर्वप्रथम मैं महान् फल प्रदान करने वाले मालामन्त्र को कहता हूँ। पाँच सौ अट्ठासी अक्षरों वाला हनुमान् का मालामन्त्र इस प्रकार है—ॐ ऐं श्रीं हां हीं हूं हस्ख्भें ख्भें हस्त्रों हस्ख्भें हस्तें ॐ नमो हनुमते प्रकटपराक्रम आक्रान्तदिङ्मण्डल यशोवितान धवलीकृत जगत्त्रितय वज्रदेह ज्वलदिग्नसूर्यकोटिसमप्रभ तनूरुह रुद्रावतार लङ्कापुरीदहनोदधिलङ्घन दशशिर:कृतान्तक सीताश्वासन वायुसुत अञ्जनीगर्भसम्भूत श्रीरामलक्ष्मणानन्दकर किपसैन्यप्राक् सुग्रीवसख्यकारण बालिनिवर्हणकारण द्रोण-पर्वतोत्पाटन अशोकवनदारण अक्षकुमारकच्छदहन रक्षोवरसमूहविभेदन ब्रह्मास्त्रब्रह्म-शक्तिग्रह लक्ष्मणशक्तिभेदविदारण विशल्यौषधिसमानयन बालभानुमण्डलग्रसन उग्रमेघनादहोमविध्वंसन इन्द्रजिद्वधकारण सीतारञ्जक राक्षसीसङ्घवीथिदारण कृम्भ-कर्णादिवधकृत्परायण रामभक्तितत्पर समुद्रव्योमसमुल्लङ्घन महासामर्थ्यमहातेज:-पुञ्जविराजमान स्वामिवचनसम्पादितार्जनसंयुगसहाय कुमारग्रहादीन् भीषय शब्दोदय दक्षिणाशामार्तण्डमेरुपर्वतवीथिकाचल सकलमन्त्रागमाचार्य मम सर्वग्रहविनाशन सर्वज्वरोच्चाटन सर्वविघ्ननाशन सर्वापत्तिनिवारण सर्वदुष्टनिवर्हण सर्वव्याघ्रादिभय-निवारण सर्वशत्रुच्छेदन मम परस्य च त्रियुगपुंस्त्रीनपुंसकात्मकं सर्वजीवं वशय वशय आनय आय ममाज्ञाकारकं सम्पादय सम्पादय नानामुनिध्येय सर्वपरिवारान् मम सेवकान् कुरु कुरु सर्वशस्त्रास्त्रविषान् विध्वंसय विध्वंसय हां हां हां हा हा हा पाहि पाहि हसौं हस्ख्में हस्रौं ख्में हस्क्रें सर्वशत्रुन् हन हन परवृत्तानि परसैन्यानि क्षोभय क्षोभय मम

सर्वकार्यजातं साधय साधय सर्वदुष्टदुर्जनमुख्यानि कीलय कीलय घें घें घें हां हां हां हीं हीं हीं हुं फट् हुं फट् हुं फट् स्वाहा॥३-३१॥

मुनिरस्येश्वरश्छन्दोऽनुष्टुब्देवोऽञ्जनीसृतः तारो नमो भगवते चाञ्जनेयाय हन्मनुः ॥३२॥ नमो भगवते शिरः स्याद्धद्रमूर्त्तये। तारो नमो भगवते शिखा वायुसुताय अग्निगर्भाय भद्राय कवचस्य मनुः नमो भगवते रामदूताय ब्रह्मास्त्रनिवारणाय नरवक्त्रास्त्रमन्त्रकः ॥३४॥ स्फटिकाभं स्वर्णकान्ति द्विभुजञ्च कृताञ्चलिम्। कुण्डलद्वयसंशोभि मुखाम्भोजं स्मरेन्मुहुः ॥३५॥ पूजा तु वैष्णवे पीठे शैवे वा चावृतिं विना। अयुतञ्च पुरश्चर्या रामस्याग्रे शिवस्य च ॥३६॥ घृतहोम: सहस्रं स्यात्तर्पणादि ततश्चरेत्।

इस मालामन्त्र के ऋषि ईश्वर, छन्द अनुष्ठुप् एवं देवता अञ्जनीसुत कहे गये हैं। इसका षडंगन्यास इस प्रकार किया जाता है—ॐ नमो भगवते आञ्जनेयाय हृदयाय नमः, ॐ नमो भगवते भद्रमूर्तये शिरसे स्वाहा, ॐ नमो भगवते वायुसुताय शिखाये वषट्, अग्निगर्भाय भद्राय कवचाय हुम्, ॐ नमो भगवते रामदूताय नेत्रत्रयाय वौषट्, ब्रह्मास्त्रनिवारणाय नरवक्त्राय अस्त्राय फट्। षडङ्गन्यास करने के बाद स्फटिक-सदृश आभा वाले, स्वर्ण-कान्तियुक्त, अञ्जलिबद्ध दो हाथों वाले, दो कुण्डलों से सुशोभित मुखकमल वाले हनुमान् का बार-बार स्मरण करना चाहिये।

इसके पुरश्चरण-हेतु वैष्णव अथवा शैव पीठ पर राम अथवा शिव के सम्मुख एक बार पूजन करके मन्त्र का दस हजार जप करने के बाद घृत से एक हजार आहुतियाँ प्रदान करते हुये हवन करने के पश्चात् तर्पण आदि करना चाहिये।।३२-३६।।

जितेन्द्रियश्चणकाशी हनुमद्ध्यानतत्परः ॥३७॥ क्षुद्ररोगनिवृत्त्यर्थमष्टोत्तरशतं जपेत् । एकान्ते त्रिदिनैर्जापात्राशो भूतादिकस्य च । महारोगादिशान्त्यर्थमष्टोत्तरसहस्रकम् ॥३८॥ सप्ताहं नियताहारो जपेत्रिशि च राक्षसाः । यहादयश्च नश्यन्ति तथा सर्वेऽभिचारकाः ॥३९॥

जयादिकाङ्क्षी त्वयुतं जपेन्निशि यतासनः । ध्यायंस्तथाक्षहन्तारं संग्रामे विजयेत च ॥४०॥ सम्यक्च रामसुग्रीवसन्धिकारं जपेत्स्मरन् । अयुतेनाप्यविच्छिन्नसन्धिमाप्नोत्यसंशयम् ॥४१॥

क्षुद्र रोगों की निवृत्ति के लिये साधक को जितेन्द्रिय रहकर चना-भक्षण करते हुये हनुमान के ध्यान में तत्पर होकर मन्त्र का एक सौ आठ बार जप करना चाहिये। इसी प्रकार तीन दिनों तक एकान्त में मन्त्रजप करने से भूत आदि का विनाश होता है।

महारोगादि की शान्ति के लिये स्वल्प आहार ग्रहण करते हुये सात दिनों तक मन्त्र का एक हजार आठ बार जप करना चाहिये। इससे दुष्ट ग्रहों तथा समस्त अभिचार कर्मों का भी निवारण होता है।

जय आदि की आकांक्षा वाले को रात्रि में नियत आसन पर बैठकर अक्षहन्ता का ध्यान करते हुये जप करने से संग्राम में विजय की प्राप्ति होती है। राम एवं सुग्रीव में सन्धि कराने वाले का सम्यक् रूप से स्मरण करते हुये मन्त्र का दस हजार जप करने से परस्पर शत्रुभृत दो लोगों में निश्चित ही सन्धि हो जाती है।।३७-४१।।

हनुमद्द्वादशाक्षरमन्त्रविद्यानम्

लङ्काया दाहकं ध्यायन्द्वादशाणं महामनुम्।
हौंबीजं सम्यगुच्चार्य पूर्वोक्तं कूटपञ्चकम् ॥४२॥
हनूमते नमो मन्त्रो रामचन्द्रो मुनिः स्मृतः।
जगतीछन्द उद्दिष्टं हनुमान्देवता मतः॥४३॥
बीजं तु पञ्चमं कूटं शक्तिराद्यं तु कूटकम्।
षड्बीजैः प्रथमैर्न्यासः षडङ्गोऽस्य प्रकीर्तितः॥४४॥
मूर्ध्नि भाले दृशोरास्ये कण्ठे बाहौ तथा हृदि।
कुक्षौ नाभौ ध्वजे जान्वोः पादयोर्मनुवर्णकान्॥४५॥
मूर्ध्नि भाले मुखे हृत्के नाभावूर्वोश्च जङ्गयोः।
पादयोर्विन्यसेन्मन्त्रं षड्बीजानि पदद्वयम्॥४६॥
बालार्काभं त्रिभुवनक्षोभकं सर्वराक्षसान्।
नादेनैव त्रासयनां सुग्रीवादिकसेवितम्॥४७॥
सुन्दरं रामचरणध्यानं ध्यायेत्समीरजम्।

हनुमान् का द्वादशाक्षर मन्त्र—लंका का दहन करने वाले का ध्यान करते हुये द्वादशाक्षर महामन्त्र का जप करना चाहिये। 'हौं हस्फ्रें ख्कें हस्रौं हस्खें हसौं हनूमते नमः' इस द्वादशाक्षर मन्त्र के ऋषि रामचन्द्र, छन्द जगती एवं देवता हनुमान् कहे गये हैं। 'हसौं' बीज है और ह्स्फ्रें शक्ति हैं। मन्त्रोक्त छः बीजों से इसका प्रथम षडङ्गन्यास कहा गया है।

इसके बाद मूर्धा, ललाट, नेत्र, मुख, कण्ठ, बाहु, हृदय, कुक्षि, नाभि, लिङ्ग, जानु एवं पादद्वय में मन्त्रवर्णों का न्यास करना चाहिये।

तत्पश्चात् मूर्धा, ललाट, मुख, हृदय, नाभि, ऊरु, जङ्घा एवं पादद्वय में मन्त्र के छ: बीज-सहित दो पदों का न्यास करना चाहिये।

तदनन्तर बालसूर्य के सदृश आभा वाले, तीनों भुवनों को क्षुब्ध करने वाले, समस्त राक्षसों को अपनी ध्वनि से ही त्रस्त करने वाले, सुग्रीव आदि द्वारा सेवित, सुन्दर रामचरणों का ध्यान करने वाले वायुपुत्र का ध्यान करना चाहिये।।४२-४७।।

पद्मे केशरेष्वङ्गपूजनम् ॥४८॥ यजेदष्टदले रामभक्तो महातेजाः कपिराजो महाबलः। द्रोणाद्रिहारको मेरुपीठकार्चनकारकः ॥४९॥ दक्षिणाशाभास्करश्च सर्वविघ्ननिवारकः । नामानि पूजयेच्य पत्रेष दलाग्रतः ॥५०॥ सुग्रीवमङ्गदं नीलं जाम्बवन्तं तथा सुषेणं द्विविदं चैव भुपूरे दिक्पतीनपि ॥५१॥ तद्वाह्ये च तदस्त्राणि जपेदर्कसहस्रकम्। दशांशं जुहुयाद् ब्रीहीन् पयोदध्याज्यसंयुतान्। प्रयोगानाचरेत्तथा ॥५२॥ सिद्धमनुर्मन्त्री

तत्पश्चात् अष्टदल कमल में यजन करना चाहिये। केशरों में अङ्गपूजन करने के बाद दलों में रामभक्त, महातेजा, किपराज, महाबल, द्रोणाद्रिहारक, मेरुपीठकार्चन कारक, दक्षिणाशाभास्कर एवं सर्विविध्निनवारक का इनके नाममन्त्रों से पूजन करने के उपरान्त दलों के आगे सुग्रीव, अङ्गद, नील, जाम्बवन्त, नल, सुषेण, द्विविद का पूजन करना चाहिये। इसके बाद भूपुर में दस दिक्पालों का यजन करने के पश्चात् भूपुर के बाहर उनके वन्नादि आयुधों का अर्चन करने के बाद मन्त्र का बारह हजार जप करके गोदुग्ध, दिध एवं गोधृत-मिश्रित ब्रीहि से कृत जप का दशांश हवन करना चाहिये। इस प्रकार सिद्ध मन्त्र वाले साधक को प्रयोगों का सम्पादन करना चाहिये।।४८-५२॥

कदलीबीजपूराम्रफलैर्हुत्वा सहस्रकम् । द्वाविंशतिं ब्रह्मचारी विप्रान् सम्भोजयेत्ततः ॥५३॥

कते महाभतविषचौराद्यपद्रवाः । एवं क्षणमात्रेण विद्विष्टग्रहदानवाः । नश्यन्ति अष्ट्रोत्तरशतेनाभिमन्त्रितं विषनाशनम् ॥५४॥ रात्रौ नवशतं मन्त्रं जपेदृशदिनावधि । नरस्तस्य नश्यन्ति राजशत्रुप्रभीतयः ॥५५॥ त भतोत्थज्वरे तन्मन्त्रमन्त्रितैः । भस्मभि: सलिलैर्वापि ताडयेज्ज्वरिणं क्रधा ॥५६॥ दिनत्रयाज्ज्वरान्मुक्तः सूखं संलभते तन्मन्त्रितौषधं जग्ध्वा नीरोगो जायते ध्रुवम् ॥५७॥

केला, बीजपूर एवं आम्रफलों से बाईस हजार हवन करके ब्रह्मचारी ब्राह्मणों को भोजन कराने से उम्र भूत, विष, चोर, दुष्ट म्रह, दानव आदि के उपद्रव तत्क्षण ही शान्त हो जाते हैं। मन्त्र के एक सौ आठ जप से अभिमन्त्रित जल विष-नाशक होता है। जो मनुष्य दस दिनों तक प्रतिदिन रात्रि में मन्त्र का नौ सौ जप करता है, उसके राजशत्रु का भय नष्ट हो जाता है।

अभिचारकर्म एवं भूत के प्रभाव से होने वाले ज्वर में इस द्वादशाक्षर मन्त्र से अभिमन्त्रित भस्म अथवा जल द्वारा तीन दिनों तक क्रुद्ध होकर ज्वराविष्ट व्यक्ति का ताड़न करने से वह ज्वर-मुक्त होकर सुख प्राप्त करता है। इस मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित औषध-भक्षण से रोगी नीरोग हो जाता है।।५३-५७।।

तन्मन्त्रितं पयः पीत्वा योद्धं गच्छन्मनुं जपेत्। शत्रुसङ्घेर्न बाध्यते ॥५८॥ तज्जप्तभस्मलिप्ताङ्गः शत्रक्षतव्रणोद्धतलूतास्फोटं भस्मना । त्रिर्मन्त्रितेन संस्पृष्टस्त्रिदिनाद्याति शुष्कताम् ॥५९॥ जपेत्सूर्योदयावधि । सूर्यास्तमयमारभ्य कीलकं भस्म चादाय सप्ताहावधि संयुतम् ॥६०॥ निखनेद्धस्मकीलौ तु विद्विषां द्वार्य्यलक्षितः। विद्वेषाद्धयमापन्नाः पलायन्तेऽरयोऽचिरात ॥६१॥ अभिमन्त्रितभस्माम्ब देवचन्दनसंयुतम् । दीयते तु यदा यस्मै स तदा तस्य दासवत्। क्रूराः स्वयं तु चौराद्या भवन्ति विविधा वशाः ॥६२॥ इस द्वादशाक्षर मन्त्र से अभिमन्त्रित दुग्ध का पान करके अङ्गों में अभिमन्त्रित भस्म लगाकर मन्त्रजप करते हुये युद्ध में गमन करने पर वह मनुष्य शत्रुओं द्वारा बाधित नहीं होता। इस मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित भस्म को शत्रु द्वारा दिये गये व्रण के कारण उत्पन्न लूता, स्फोट आदि पर तीन दिनों तक लगाने से वे सूख जाते हैं।

एक सप्ताह-पर्यन्त सूर्यास्त से आरम्भ करके सूर्योदय-पर्यन्त इस मन्त्र से अभिमन्त्रित कील और भस्म को गुप्त रूप से शत्रु के द्वार पर जमीन के नीचे दबा देने से विद्वेष के कारण भयभीत वे शत्रु वहाँ से पलायित हो जाते हैं।

अभिमन्त्रित भस्म एवं जल को देवचन्दन से मिश्रित करके साधक द्वारा जिसे प्रदान किया जाता है, वह उसी समय से साधक के दास-समान हो जाता है। अनेकानेक क्रूर मनुष्य, चोर आदि भी अपने-आप ही उसके वशीभूत हो जाते हैं॥५८-६२॥

ईशानिदिशि मूलेन भूताङ्कुशतरोः शुभाम् । अङ्गुष्ठमात्रां प्रतिमां संविधाय हनूमतः ॥६३॥ प्राणसंस्थापनं कृत्वा सिन्दूरैः परिपूज्य च। गृहस्याभिमुखीं द्वारे निखनेन्मन्त्रमन्त्रिताम् ॥६४॥ सञ्जायन्ते कदाचित्र गेहे तस्मिन्नुपद्रवाः । प्रत्यहं धनपुत्राद्यैरेधते तद्गृहं चिरम् ॥६५॥

ईशान कोण की ओर प्रसृत मूल (जड़) वाले भूताङ्कुश (पीपल) वृक्ष की लकड़ी से हनुमान की अङ्गुष्ठ-मात्र ऊँची प्रतिमा बनाकर उसे ईशान दिशा में स्थापित कर प्राणप्रतिष्ठित करके सिन्दूर द्वारा सम्यक् रूप पूजन करने के पश्चात् इस मन्त्र से अभिमन्त्रित कर गृहद्वार के सामने भूमि के अन्दर दबा देने से उस घर में कभी भी कोई उपद्रव नहीं होता; साथ ही चिर काल-पर्यन्त प्रतिदिन उस घर में धन-पुत्र आदि की वृद्धि होती रहती है।।६३-६५।।

निशि श्मशानभूमिस्थमृत्स्नया वापि भस्मना।
शत्रोः प्रतिकृतिं कृत्वा हृदि नाम समालिखेत्॥६६॥
कृतप्राणप्रतिष्ठान्तां भिन्द्याच्छस्त्रैर्मनुं जपेत्।
मन्त्रान्ते प्रोच्चरेच्छत्रोर्नाम च्छिन्धि च भिन्धि च॥६७॥
मारयेति च तस्यान्ते दन्तैरोष्ठं निपीड्य च।
एवं सप्तदिनं कुर्वन् हन्याच्छत्रूत्रसंशयः॥६८॥
अर्द्धचन्द्राकृतौ कुण्डे स्थण्डिले वा हुतं चरेत्।
मुक्तकेशः श्मशानस्थो बलासौराष्ट्रिकायुतैः॥६९॥

उन्मत्तफलपुष्पैश्च नखरोमविषैरपि । काककौशिकगृधाणां पक्षैः श्लेष्मान्तकाक्षजैः ॥७०॥ समिद्वरैश्च त्रिशतैर्दक्षिणाशामुखो निशि । होमं कुर्यात्मरन्मन्त्रं मारयेद्रिपुमुद्धतम् ॥७१॥

रात्रि में श्मशानभूमि की मिट्टी अथवा भस्म द्वारा शत्रु की प्रतिमा बनाकर उसके हृदय में शत्रु का नाम लिखने के बाद प्राण-प्रतिष्ठा करने के उपरान्त उसे शस्त्र से काटकर मन्त्र के अन्त में शत्रु के नाम का उच्चारण करते हुये 'छिन्धि भिन्धि मारय' लगाकर जप करने के अनन्तर दाँतों द्वारा होठ को निपीड़ित करना चाहिये। ऐसा सात दिनों तक करने से निश्चित ही शत्रु की मृत्यु हो जाती है।

बला, सौराष्ट्रिका, धत्तूर-फल एवं पुष्प, नख, रोम, विष, काकपक्ष, उलूक-पक्ष, गीध्रपक्ष, लिसोड़ा-फल—इन श्रेष्ठ सिमधाओं द्वारा रात्रि में अर्धचन्द्राकार वेदी पर निर्मित कुण्ड अथवा स्थिण्डल में मन्त्र-स्मरण करते हुये दक्षिणमुख होकर तीन सौ आहुतियों द्वारा हवन करने वाला साधक उद्धत शत्रु का भी वध करने में समर्थ होता है॥६६-७१॥

शतषट्कं जपेद्रात्रौ श्मशाने दिवसत्रयम्। ततो वेताल उत्थाय वदेद्रावि शुभाशुभम्। कुरुते सर्वं किङ्करीभूय मन्त्रिणः ॥७२॥ उदितं भूमौ संलिखेत्तत्पुरो हनुमत्प्रतिमां मनुम्। विमोचय विमोचय ॥७३॥ साध्यनामद्वितीयान्तं तत्सर्वं पुनर्लिखेत्। मार्जयेद्वामहस्तेनाथ मार्जयेत्पुनः ॥७४॥ एवमष्टोत्तरशतं लिखित्वा कृते पराधीनो निगडैर्मुच्यते क्षणात्। एवं विद्वेषणादीनि कुर्यात्तत्पल्लवं लिखेत् ॥७५॥

तीन दिनों तक रात्रि में श्मशान में जाकर प्रतिरात्रि मन्त्र का छ: सौ जप करने पर वेताल प्रकट होकर होने वाले शुभाशुभ को साधक से कहता है और मन्त्रज्ञ साधक का दास होकर उसकी आज्ञानुसार समस्त कार्यों को सम्पादित करता है।

भूमि पर हनुमान् की प्रतिमा बनाकर उसके सामने मन्त्र के साथ द्वितीयान्त साध्य-नाम-पूर्वक 'विमोचय विमोचय' लिखने के पश्चात् सबको अपने बाँयें हाथ से मिटाकर पुनः पूर्ववत् प्रतिमा बनाकर उसी प्रकार लिखकर बाँयें हाथ से सबको मिटा देना चाहिये। इस प्रकार एक सौ आठ बार करने से पराधीन निगड़बद्ध मनुष्य तत्काल ही बन्धनमुक्त हो जाता है। इसी प्रकार विद्वेषण आदि में भी करना चाहिये। उसमें पल्लव लगाकर मन्त्र लिखना चाहिये।।७२-७५।।

वश्यार्थं सर्षपेहोंमो विद्वेषे करवीरजै:।
कुसुमैस्तस्य काष्ठैर्वा जीरकैर्मिरचैरिप ॥७६॥
ज्वरे दूर्वागुडूचीभिर्दध्ना क्षीरेण वा घृतै:।
तैलाक्ताभिश्च निर्गुण्डीसमिद्धिर्वा समाचरेत्॥७७॥
सौभाग्यैश्चन्दनै: श्वेतै रोचनैलालवङ्गकै:।
सुगन्धिपुष्पैर्वश्यार्थं सप्तधान्यैस्तदाप्तये॥७८॥
किं बहूक्तैर्विषव्यार्थौ शान्तौ मोहे च मारणे।
विवादे स्तम्भने चैव भूतभीतौ च सङ्कटे॥७९॥
वश्ये युद्धे क्षते दिव्ये बन्धमोक्षे महाबले।
मन्त्रोऽयं साधितो दद्यादिष्टसिद्धिं नृणां ध्रुवम्॥८०॥

वशीकरण के लिये सरसों से एवं विद्वेषण के लिये कनैल-पुष्प अथवा सिमधा, जीरा अथवा मिरच से हवन करना चाहिये। ज्वर की समाप्ति-हेतु दिध एवं दुग्ध अथवा घृत-सिक्त दूर्वा एवं गिलोय अथवा तैल-सिक्त निर्गुण्डी की सिमधा से हवन करना चाहिये। वशीकरण के लिये सुहागा, श्वेत चन्दन, गोरोचन, इलायची, लवंग एवं सुगन्धित पुष्पों से हवन करना चाहिये। सप्तधान्य की प्राप्ति-हेतु सप्तधान्य से ही हवन करना चाहिये। बहुत कहने से क्या लाभ? विष-जिनत व्याधि, शान्ति, मोह, मारण, विवाद, स्तम्भन, भूतों का भय, संकट, वशीकरण, युद्ध, दिव्य क्षत, बन्ध, मोक्ष एवं महाबल की अवस्था में साधित यह मन्त्र मनुष्य को अवश्य ही इष्टसिद्धि प्रदान करता है।।७६-८०।।

नवग्रहोपासितहनुमन्मालामन्त्रकथनम्

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि मालामन्त्रानुपासितान् । नवप्रहैर्हनुमतो जपात्सिद्धिविधायकान् ॥८ १॥ तेषां मुन्यादिकं न्यासः षडङ्गं पूजनन्तथा । प्रयोगाश्च परिज्ञेयाः साधकैर्द्वादशार्णवत् ॥८ २॥

नवश्रहोपासित हनुमन्मालामन्त्र—अब मैं नवश्रहों द्वारा उपासित हनुमान् के मालामन्त्रों को कहता हूँ; ये मन्त्र जपमात्र से सिद्धि प्रदान करने वाले हैं। साधक को इन मन्त्रों के ऋषि आदि, षडङ्ग न्यास, पूजन एवं प्रयोग द्वादशाक्षर मन्त्र के समान जानने चाहिये॥८१-८२॥

भास्करोपासितहनुमन्पालामन्त्रकथनम्

तत्रादौ सम्प्रवक्ष्यामि भास्करोपासितं मनुम्। पूर्वोक्तमालामन्त्रस्य बीजमेकादशन्तु तत् ॥८ ३॥ नवानामपि मन्त्राणामादौ जानन्तु देवताः । हनुमते वदेन्नमः परस्य वदेन्नमो च ॥८४॥ प्रोच्य तथा चारिक्षतज्वरः। क्षयदुष्टगणान् एकाहिकद्वचाहिकेति त्र्याहिकेति चतुर्थकः ॥८५॥ सन्ततज्वरसन्नीति पातिकज्वरभूवदेत्। मन्त्रेति तज्बरेति ज्वरशूलभगन्दर ॥८६॥ ਚ मूत्रकृच्छुकपोलेति वृन्दस्थलपदन्ततः। कर्णशूलेत्यक्षिशूलवदेच्चरदशूलक 116/211 हस्तशृलेति पादेति शूलादीन् सर्वमुच्चरेत्। व्याधीन् क्षणात्त्रासयेति भिन्धि छिन्धि विनाशय ॥८८॥ निकर्त्तय त्रेधा छेदय द्विश्च ह्रांद्वयं वदेत् ॥८९॥ महावीरपदन्तारं हनुमन् हुं हे च वदेद् हीं हे हुं फट् वहिगेहिनी। मालामन्त्रोऽयमुद्दिष्टः सर्वरोगविनाशकः ॥९०॥

सूर्य द्वारा उपासित हनुमान् का मालामन्त्र—सबसे पहले मैं सूर्योपासित मन्त्र को कहता हूँ। समस्त रोगों का विनाशक यह मालामन्त्र इस प्रकार कहा गया है— ॐ ऐं हीं हां हीं हूं हस्क्रे छों हस्तों हस्छों हसीं नमो हनुमते नमः परस्य क्षयदुष्टगणान् अरिक्षतज्वर-एकाहिक-द्व्याहिक-त्र्याहिक-सन्ततज्वर-सात्रिपातिकज्वर-भूतज्वर-मन्त्रज्वर-शूल-भगन्दर-मूत्रकृच्छ्-कभोलवृन्दस्थल-दन्त-कर्णशूल-अक्षिशूल-चरद-शूलक-हस्तशूल-पादशूलादीन् सर्वव्याधीन् क्षणात् त्रासय-त्रासय भिन्धि-भिन्धि छिन्धि-छिन्धि विनाशय-विनाशय निकर्तय-निकर्तय छेदय-छेदय भेदय-भेदय महावीरहनुमन् हां हां हां हां हीं हीं हां हं फट् स्वाहा॥८३-९०॥

चन्द्रोपासितहनुमन्मालामन्त्रकथनम्

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि चन्द्रेणोपासितं मनुम्। वदेन्नमो भगवते राक्षसेति कुलेति च॥९१॥ दानवानलद्वादशार्ककोट्युज्ज्वलप्रभेति च। रंतु रूंहं भीमनादं वदेन्मम परस्य च॥९२॥ दुष्टदुर्जनमोहाय वदेत्कारक वादिवि। वादिद्वेषकारकेति कार्यभञ्जक संवदेत् ॥९३॥ कुरु प्रकृतिकेत्युक्तवा प्रवृत्तपदमुच्चरेत्। कोपावेशेन हत्वेति चामुकान्वै समुच्चरेत् ॥९४॥ दूरस्थेति समीपस्थांस्ततो भूतभवीति च। ष्यद्वर्त्तमानान् पुंस्त्रीनपुंसकान् पदमुच्चरेत्। चतुर्वर्णान् क्षणेनेति सत्वरं जहियुग्मकम्। दह संहारय द्विर्द्विर्मोहयपदं वदेत् ॥९५॥ द्विद्वेषय द्विवंदेत्सर्पालिमूषक। शमय वत्सद्यः पदमुच्चार्य प्राणिनः पदमुच्चरेत् ॥९६॥ द्विविध्वंसय हिलिद्विर्द्विर्मूकम्पराजय। बन्धय द्वि: पातय द्विर्ममेति च परस्य च ॥९७॥ दासीभूतं वदेद् द्वेधा सम्पादय त्रिधा त्रिधा। ह्रांहुं त्रिधा च फट्स्वाहा मन्त्रोऽयं समुदीरित: ॥९८॥

चन्द्रोपासित हनुमन्मालामन्त्र—अब मैं चन्द्र द्वारा उपासित मन्त्र को कहता हूँ। वह मन्त्र इस प्रकार कहा गया है—नमो भगवते राक्षसकुलदानवानलद्वाद-शार्ककोट्युज्ज्वलप्रभ रं रूं हं भीमनादं मम परस्य च दुष्टदुर्जनमोहाय कारक वादिविवादिद्रेषकारक कार्यभञ्जक कुरु प्रकृतिकप्रवृत्तकोपावेशेन हत्वा अमुकान् वै दूरस्थसमीपस्थान् भूतभविष्यद्वर्तमानान् पुंस्त्रीनपुंसकान् चतुर्वर्णान् क्षणेन सत्वरं जिह-जिह दह-दह संहारय-संहारय मोहय-मोहय शमय-शमय द्वेषय-द्वेषय सर्पालिमूषकवत् सद्यः प्राणिनः विध्वंसय विध्वंसय हिलि-हिलि मूकं पराजय-पराजय बन्धय-बन्धय पातय-पातय मम परस्य च दासीभृतं सम्पादय-सम्पादय हां हां हां हुं हुं हुं फट् फट् फट् स्वाहा॥९१-९८॥

मङ्गलोपासितहनुमन्मालामन्त्रकथनम्

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि मङ्गलोपासितं मनुम्। वदेत्रमो हनुमते महाबलपराक्रम ॥९९॥ मम परस्य च भूत वदेत्प्रेतिपशाचशा। किनी डापदमुच्चार्य किनी यक्षिणिका च पू॥१००॥ तना मारी महामारी कृत्या यक्षेति राक्षस। वदेद्भैरववेतालग्रहेति ब्रह्मराक्षसा॥१०१॥ दिकजातक्रूरबन्धान् क्षणेन जिह्युग्मकम् ।
भञ्जयद्वितयं प्रोच्य वदेद् द्वेधा निरासय ॥१०२॥
देधा वारय बन्ध द्विस्तुद सूद द्वयं द्वयम् ।
बन्धं द्वेधा मोचय द्विर्मामेनं च पदं वदेत् ॥१०३॥
रक्तरक्तमहामोहेश्वररुद्रावतार हा ।
हाहाहुंहुं त्रिधा हुंफट्स्वाहायमुदितो मनुः ॥१०४॥

मङ्गल द्वारा उपासित मालामन्त्र—अब में मङ्गल द्वारा उपासित मन्त्र को कहता हूँ। वह इस प्रकार कहा गया है—नमो हनुमते महाबलपराक्रम मम परस्य च भृत-प्रेत-पिशाच-शाकिनी-डािकनी-यिक्षिणिका-पृतना-मारी-महामारी-कृत्या-यक्ष-राक्षस-भैरव-वेताल-ग्रह-ब्रह्मराक्षसादिकजातक्रूरबन्धान् क्षणेन जिह-जिह भञ्जय-भञ्जय निरासय-निरासय वारय-वारय बन्ध-बन्ध तुद-तुद सूद-सूद बन्ध-बन्ध मोचय-मोचय मां एनं रक्त-रक्त-महामोहेश्वर रुद्रावतार हा हा हा हं हं हं हु फट् स्वाहा।।९९-१०४।।

बुघोपासितहनुमन्मालामन्त्रकथनम्

सम्प्रवक्ष्यामि बुधेनोपासितं मनुम्। प्रोच्य त्रैलोक्यक्रमणेति च ॥१०५॥ हनुमते चोच्चरेत्। सर्वशत्रूंश्चतुर्वर्णसम्भवानिति भूतभविष्यद्वर्तमोच्चरेत्॥१०६॥ पुंस्त्रीनपुंसकान् नान्द्ररस्थसमीपस्थान्नानामपदं लिखेत्। सङ्करजातिजातान् पदं चैव समुच्चरेत्।।१०७॥ कलत्रपुत्रमित्रेति भृत्यबन्धुसुहृत्पदम् । समेतान्धनुरा वदेत् ॥१०८॥ समतापुरुशक्तीति ज्यादिसम्पत्तियुतान्नाराजराजेति । पुत्रसे । वकान्मन्त्रिसचिवसखीनुक्त्वात्यन्तिकान् क्षणात्॥१०९॥ कुरुद्वयपदं वदेदधिपति मां ततः। च नानोपायैर्मारयद्विः च्छेदय ॥११०॥ शत्रूंश्छेदय भूतसङ्घै: सहेत्युक्तवा वदेद्धक्षय भक्षय। भिन्धि भिन्धि च सम्प्रोच्य त्विग्निना ज्वालयद्वयम् ॥१११॥ प्रोच्य वदेदक्षकुमारवत्। दाहयद्वितयं चैव पादतलाक्रमणेन तनुं शिलातले ॥११२॥ द्विद्विर्बन्धयपदं व्यात्रोटय घातय वदेत्। चेति पदं प्रोच्य नखैर्द्वेधा विदारय ॥११३॥ देशादस्मादिति प्रोच्य वदेदुच्चाटयद्वयम् । द्विर्ध्वंसय त्रासय द्विवंदेत्पश्चाद्धयातुरान् ॥११४॥ उच्चार्य द्वेधा कुरुपदं वदेत्। विसंज्ञान् सद्य भस्मीभूतांस्ततो द्वेधा वदेदुत्पाटयेति च ॥११५॥ भक्तजनवत्सलेति सीताशोकापहारक। सर्वत्र मां वदेदेनं रक्ष रक्ष च हा पुनः ॥११६॥ त्रिधा द्विः फट्स्वाहान्तो मनुरीरितः। सर्वाभीष्ट्रप्रदायकः ॥११७॥ वेदपञ्जत्रिवर्णोऽ यं

बुध द्वारा उपासित मालामन्त्र—अब मैं बुध द्वारा उपासित मन्त्र को सम्यक् रूप से कहता हूँ। समस्त अभीष्ट को प्रदान करने वाला तीन सौ चौवन अक्षरों का यह मन्त्र इस प्रकार है—नमो हनुमते त्रैलोक्यक्रमण सर्वशत्रृंश्चतुर्वर्णसम्भवान् पुंस्त्रीनपुंसकान् भूतभविष्यद्वर्तमानान् दूरस्थसमीपस्थान् नानानामसङ्करजातिजातान् कलत्र-पुत्र-मित्र-बन्धु-सुहृत्समतापुरुशित्तसमेतान् धनुराज्यादिसम्पत्तियुतान् नाराज-राजपुत्रसेवकान् मन्त्रिसचिवसखीन् आत्यन्तिकान् क्षणात् अधिपतिं मां कुरु कुरु नानोपायैः मारय-मारय शत्रून् च्छेदय-च्छेदय भूतसङ्घैः सह भक्षय-भक्षय भिन्धि-भिन्धि अग्निना ज्वालय-ज्वालय दाहय-दाहय अक्षकुमारवत् पादतलाक्रमणेन तनुं शिलातले व्यात्रोटय-व्यात्रोटय घातय-घातय बन्धय-बन्धय कुधा नखैर्वदारय-विदारय देशादस्मात् उच्चाटय-उच्चाटय ध्वंसय-ध्वंसय त्रासय-त्रासय भयातुरान् विसंज्ञान् सद्यः कुरु कुरु भस्मीभूतान् उत्पाटय-उत्पाटय भक्तजनवत्सल सीताशोकापहारक सर्वत्र मां एनं रक्ष रक्ष हा हा हा हुं हुं हुं फट् फट् स्वाहा॥१०५-११७॥

गुरूपासितहनुमन्मालामन्त्रकथनम्

सम्प्रवक्ष्यामि गुरुणोपासितं मनुम्। अथात: हनुमते प्रोच्य वदेन्मम परस्य च ॥११८॥ महाभयानि सर्वेति व्याघ्रतस्कर संवदेत् ॥११९॥ ज्वालाग्निविषजङ्गेति मस्थावरमहेति कुत्रिमोपविषमहासंग्रामे च पदं वदेत् ॥१२०॥ दुष्टवादे विवादे च शत्रोः कामान् हरद्वयम्। त्रोटय द्विर्भञ्जय स्तम्भय त्रिधा ॥१२१॥ त्रोटय द्विर्द्विर्वानर क्षम संवदेत्। महावीरेति मामेनं रक्ष रक्ष त्रिधा त्रिधा ॥१ २२॥ हा हुं द्वे त्रिश्च फट् स्वाहा प्रोक्तोऽयं मनुसत्तमः। सर्वपीडाहरो रामवशकृद्धाग्यदायकः॥१२३॥

गुरु द्वारा उपासित मालामन्त्र—अब मैं गुरु द्वारा उपासित मन्त्र को सम्यक् रूप से कहता हूँ। मन्त्र है—नमो हनुमते मम परस्य च महाभयानि सर्वव्याघ्र-तस्कर-ज्वालाग्नि-विष-जङ्गम-स्थावरमहाकृत्रिमोपविष-महासंग्रामे दुष्टवादे विवादे रात्रोः कामान् हर-हर ग्रासय-ग्रासय त्रोटय-त्रोटय भञ्जय-भञ्जय स्तम्भय-स्तम्भय कण्डय-कण्डय त्रोटय-त्रोटय वानरक्षम महावीर मामेनं रक्ष रक्ष हा हा हा हुं हुं फट् फट् स्वाहा।

यह मन्त्र समस्त पीड़ाओं का हरण करने वाला, राम को वशीभृत करने वाला एवं सौभाग्य प्रदान करने वाला है॥११८-१२३॥

शुक्रोपासितहनुमन्पन्त्रकथनम्

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि शुक्रेणाराधितं मनुम्।
तारो नमो हनुमते वदेत्सर्वग्रहानिति ॥१२४॥
भूतेति च भविष्यच्य वर्तमानान्पदं वदेत् ॥१२५॥
दूरस्थांश्च समीपस्थान् सर्वकालं वदेत्पदम्।
उच्चाटयद्वयं प्रोच्य परेति च बलानि च॥१२६॥
क्षोभयद्वितयं सर्वकार्याणि साधयद्विधा।
हांहींहूंद्विस्त्रयं फट् च स्वाहान्तोऽयं मनुर्मतः॥१२७॥
महाबलकरश्चायमपमृत्युविनाशकः

शुक्र द्वारा उपासित हनुमन्मन्त्र—अब में शुक्र द्वारा आराधित मन्त्र को सम्यक् रूप से कहता हूँ। मन्त्र है—ॐ नमो हनुमते सर्वग्रहान् भूतभविष्यद्वर्तमानान् दूरस्थान् समीपस्थान् सर्वकालं उच्चाटय-उच्चाटय परबलानि क्षोभय-क्षोभय सर्वकार्याणि साधय-साधय ह्वां ह्वां ह्वीं ह्वें हूं फट् फट् फट् स्वाहा। शुक्र द्वारा उपासित यह मन्त्र अतिशय बल प्रदान करने वाला एवं अपमृत्यु का विनाश करने वाला है।।१२४-१२७।।

शन्युपासितहनुमन्मालामन्त्रकथनम्

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि शनिनाराधितं मनुम्। परकृतयन्त्रमन्त्रपराहंकारसंवदेत् ॥१२८॥ भूतप्रेतपिशाचेति सर्वज्वरपरेति च। दृष्टिरोगादिकान् प्रोच्य द्विस्त्रासय निवारय॥१२९॥ बन्ध बन्धय च द्वेधा इलवुचिलवु वदेत्। कुयन्त्राणि सर्वदुष्टवाचं हुं फट् दहाङ्गना। इत्येवायं मनुः प्रोक्तः सर्वापत्तिनिवारकः॥१३०॥

शनि द्वारा आराधित मन्त्र—अब मैं शनि के द्वारा आराधित मन्त्र को सम्यक् रूप से कहता हूँ। वह मन्त्र इस प्रकार है—परकृतयन्त्र-मन्त्र-पराहङ्कार-भूत-प्रेत-पिशाच-सर्वज्वर-परदृष्टि-रोगादिकान् त्रासय-त्रासय निवारय-निवारय बन्ध बन्धय-बन्धय इलवुचिलवुकुयन्त्राणि सर्वदुष्टवाचं हुं फट् स्वाहा। यह मन्त्र समस्त आपित्तयों का निवारण करने वाला कहा गया है।।१२८-१३०।।

राहूपासितहनुमन्मालामन्त्रकथनम्

सम्प्रवक्ष्यामि राहुणोपासितं मनुम्। भगवते प्रोच्य वदेखनुमते पदम् ॥१३१॥ पवनात्मजायेति राघवप्राणसमाय तु । लक्ष्मणप्राणदात्रे च सीताशोकविनाशकः ॥१३२॥ ङेऽन्तो रावणदर्पघ्नो ङेऽन्तः सर्वपदं वदेत्। दुष्टविनाशनायेति रिपुचौरपदं वदेत् ॥१३३॥ व्याघ्रवराहकृत्येति चान्तकाय वदेत्। पदं दृष्टसत्त्वविनाशेति नाय हुंफड् हुताङ्गना ॥१३४॥ उक्तोऽयं मनुराजस्तु लक्ष्मीविद्याजयप्रदः । विशेषतोऽपमृत्योश्च नाशको रामवल्लभः ॥१३५॥

राहु द्वारा उपासित मन्त्र—अब मैं राहु के द्वारा उपासित मन्त्र को सम्यक् रूप से कहता हूँ। मन्त्र है—नमो भगवते हनुमते पवनात्मजाय राघवप्राणसमाय लक्ष्मणप्राणदात्रे सीताशोकविनाशकाय रावणदर्पघ्नाय सर्वदुंष्टविनाशनाय रिपु-चौर-व्याघ्र-वराह-कृत्यान्तकाय दुष्टसत्त्वविनाशनाय हुं फट् स्वाहा।

यह मन्त्रराज लक्ष्मी, विद्या एवं जय प्रदान करने के साथ-साथ विशेषतया अपमृत्यु का विनाशक कहा गया है। शनि द्वारा आराधित यह मन्त्र राम को अतिशय प्रिय है।। १३१-१३५।।

केतूपासितहनुमन्मन्त्रकथनम्

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि केतुनोपासितं मनुम्। नमो भगवते प्रोच्य वदेखनुमतेपदम्॥१३६॥

चोररिपुकृमिखगपतङ्गादीन् समुच्चरेत्। उच्चाटय हुंफट् च स्वाहान्तो मनुरीरित: ॥१३७॥ रामचन्द्रो मुनिश्चैषां गाथा छन्दः प्रकीर्तितम्। हनुमान् देवता सम्प्रकीर्तितः ॥१३८॥ महावीरोऽत्र नवमं कूटमुद्दिष्टं बीजं शक्तिस्तथाप्टमम्। एकादशकूटपूर्वं नामन्यासं समाचरेत् ॥१३९॥ ङेऽन्तं नाम तथाङ्ग्ष्ठादिके चापि षडङ्गकम्। रामदूतश्च लक्ष्मणप्राणदायकः ॥१४०॥ हनुमान् अञ्जनीसूनुरित्येवं सीताशोकविनाशनः । नेत्रान्तमेवं कृत्वा तु लङ्काप्रासादभञ्जकः ॥१४१॥

केतु द्वारा उपासित मन्त्र—अब मैं केतु द्वारा उपासित मन्त्र को कहता हूँ। मन्त्र है—नमो भगवते हनुमते चोर-रिपु-कृमि-खग-पतङ्गादीन् उच्चाटय हुं फट् स्वाहा। इस मन्त्र के ऋषि रामचन्द्र एवं छन्द गाथा कहा गया है। महावीर हनुमान् इसके देवता कहे गये हैं। इसका बीज हसों एवं शक्ति हसों कहा गया है।

इसका करन्यास इस प्रकार किया जाता है—हसौँ हनुमते अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, हसौँ रामदूताय तर्जनीभ्यां नमः, हसौँ लक्ष्मणप्राणदायकाय मध्यमाभ्यां नमः, हसौँ अञ्जनीसूनवे अनामिकाभ्यां नमः, हसौँ सीताशोकविनाशनाय कनिष्ठाभ्यां नमः, हसौँ लङ्काप्रासादभञ्जकाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

इसके बाद इस प्रकार षडङ्ग न्यास करना चाहिये—हसौं हनुमते हृदयाय नमः, हसौं रामदूताय शिरसे स्वाहा, हसौं लक्ष्मणप्राणदायकाय शिखाये वषट्, ह्सौं अञ्जनीसूनवे कवचाय हुम्, हसौं सीताशोकविनाशनाय नेत्रत्रयाय वौषट्, ह्सौं लङ्काप्रासादभञ्जकाय अस्ताय फट्।।१३६-१४१॥

अर्कास्तमयमारभ्य यावत्सूर्योदयो भवेत्। तावन्मन्त्रं जपेद्रात्रौ कार्यमुद्दिश्य मन्त्रवित्। सप्ताहाज्जायते सिद्धिर्वायुपुत्रप्रसादतः॥१४२॥ रात्रौ रात्रौ जपेन्मन्त्रं षष्ठ्यां चाष्टोत्तरं शतम्। दश वासरपर्यन्तं राजशत्रुभयं हरेत्॥१४३॥ औषधावसरे मन्त्रं दशवारं जपेद् बुधः। तेनाभिमन्त्रितं दत्तं सर्वं सफलतां व्रजेत्॥१४४॥ भस्माभिमन्त्रितं यस्य देहे चन्दनमिश्रितम्। चर्चितं परबाधादि तस्य नश्यत्यसंशयम्॥१४५॥ स वश्यो जायते नूनं प्राणैरिप धनैरिप।
दासतां याति देवोऽिप मनुष्येषु च का कथा॥१४६॥
क्रूरसत्त्वानि सर्वाणि वश्येदमुना खलु।
प्रकारेण महावीरज्वरितः शान्तितामियात्॥१४७॥
बन्धमुक्तौ जपेन्मन्त्रं रात्रौ रात्रौ न संशयः।
द्वादशार्णप्रयोगांश्च निखिलांस्तत्र कारयेत्॥१४८॥

मन्त्रज्ञ साधक को कार्य को ध्यान में रखकर सूर्यास्त से आरम्भ कर सूर्योदय-पर्यन्त रात्रि में मन्त्रजप करना चाहिये। ऐसा करने से वायुपुत्र की कृपा से एक सप्ताह में कार्य की सिद्धि हो जाती है।

षष्ठी तिथि से प्रारम्भ कर दस दिनों तक अर्थात् पूर्णिमा-पर्यन्त प्रतिरात्रि मन्त्र का एक सौ आठ बार जप करने पर राजशत्रु-भय की समाप्ति होती हैं। रोगी को औषधि प्रदान करते समय मन्त्र के दस जप से अभिमन्त्रित औषधि देने से विद्वान् वैद्य को पूर्ण सफलता प्राप्त होती हैं। चन्दन-मिश्रित भस्म को अभिमन्त्रित कर जिसके शरीर में उस भस्म का साधक द्वारा लेप किया जाता है, उसके शरीर में प्रविष्ट परबाधायें अवश्य ही नष्ट हो जाती हैं; साथ ही परबाधा-ग्रस्त वह व्यक्ति अपने धन एवं प्राण दोनों से निश्चित ही साधक के वशीभूत हो जाता है। इस भस्म के लेप से जब देवता भी वशीभूत हो जाते हैं तो फिर मनुष्यों का तो कहना ही क्या है? इस भस्म के प्रयोग सभी क्रूर प्राणी निश्चित ही वशीभूत हो जाते हैं। इसी प्रकार के अवलम्बन से भयंकर ज्वर भी शान्त हो जाता है। बन्धन से मुक्ति के लिये प्रत्येक रात्रि मन्त्रजप करना चाहिये। द्वादशाक्षर मन्त्र में कथित समस्त प्रयोगों का भी इससे साधन करना चाहिये। १४२-१४८।।

स्तम्भने तु यवो माषा न्यय्रोधस्य फलानि च। शाल्मलीकुसुमं हरिद्रामलकीफलम् ॥१४९॥ तालं मधुरत्रयसंयुक्तं यथालाभं होमयेत्। तु उच्चाटार्थं हुनेच्छलेष्मान्तकविभीतकान् ॥१५०॥ निशि कार्यमिष्टं अष्टोत्तरशतं रात्रौ सिब्ह्यति । च वश्यार्थं होमयेद्वाक्षामपूपानथ गुग्गुलम् ॥१५१॥ विद्वेषे कटुतैलेन संयुक्तं हिंगु होमयेत्। पञ्चखाद्यैर्नालिकेरैरिक्षुभिः कदलीफलैः ॥१५२॥ सर्वसन्तोषकृद्धोमो मधुरत्रितयान्वितै: । काश्मीरकस्तूरीत्वक्समीरणैः ॥१५३॥ सौभाग्यार्थं

पत्रागुरुनखैर्मांसीजातीपत्रफलैस्तथा । धत्तूरफलपुष्पाणि समिधो मोहने स्मृताः ॥१५४॥

स्तम्भनकर्म में जौ, उड़द, वट का फल, शाल्मली(सेमर)पुष्प, हरताल, हर्ल्दा एवं आँवला को मधुर-त्रय से युक्त करके कर्म-सिद्धि-पर्यन्त हवन करना चाहिये। उच्चाटन के लिये रात्रि में लिसोड़ा और वहेड़ा से एक साँ आठ आहुतियाँ प्रदान करते हुये हवन करने से अभीष्ट कार्य सिद्ध हो जाता है। वशीकरण की सिद्धि के लिये द्राक्षा (दाख), अपूप (पृआ) एवं गुग्गुल मिलाकर हवन करना चाहिये। विद्वेषण कर्म की सिद्धि-हेतु सरसो तैल-मिश्रित हींग से हवन करना चाहिये।

पञ्चमेवा, नारियल, ईक्षुखण्ड एवं केला को मधुरत्रय से सिक्त कर किया गया हवन पूर्ण सन्तोष प्रदान करने वाला होता है अर्थात् इस हवन से सभी कार्य सिद्ध होते हैं।

सौभाग्य-प्राप्ति के लिए केशर, कस्तूरी, समीरण (मरुवा) की छाल, अगुरुपत्र, नख (वृश्चिका), जटामासी, जायफल की छाल एवं फल, धत्तूर के फल एवं पुष्प की समिधा से मोहन कर्म-सिद्धि के लिये हवन करना चाहिये।।१४९-१५४।।

पञ्चकूटात्मकहनुमन्मन्त्रकथनम्

सम्प्रवक्ष्यामि पञ्जकुटात्मकं मनुम्। अथात: कुटानि तान्येव पञ्च मन्त्रतः ॥१५५॥ समुद्धतानि रामदूतश्च लक्ष्मणप्राणदायकः । हनुमान् ततोऽञ्जनासुतः प्रोक्तः सीताशोकविनाशकः ॥१५६॥ परिज्ञेयो लङ्काप्रासादभञ्जनः । ततः कुटपूर्वाणि कपेरेतानि नामानि सन्ति च॥१५७॥ पञ्चकुटानि चैकेन षडङ्गमनवः ध्यानपुजादिकं सर्वं विज्ञेयं द्वादशार्णवत् ॥१५८॥

हनुमान् का पञ्चकूटात्मक मन्त्र—अब इस समय में हनुमान् के पञ्चकूटात्मक मन्त्र को कहता हूँ। पूर्व में जिन पाँच कूटों का उद्धार किया गया है, उन्हीं कूटों के सिंहत किया के हनुमान्, रामदूत, लक्ष्मणप्राणदायक, अंजनासुत, सीताशोक-विनाशक, लंकाप्रसादभंजक—ये छः नाम संयुक्त कर यह मन्त्र बनता है। उक्त पाँच कृटों से अलग-अलग एवं एक साथ सबको मिलाकर इसका षडङ्गन्यास किया जाता है। इस मन्त्र के ध्यान, पूजन आदि सब कुछ द्वादशाक्षर मन्त्र के समान जानने चाहिये।।१५५-१५८।।

रुद्रोपासितहनुमन्मन्त्रकथनम्

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि मन्त्रं रुद्रैरुपासितम् । नवग्रहादिमन्त्राणां बीजान्येकादशैव तु ॥१५९॥ स एव मन्त्रो रुद्रेण सहायार्थमुपासितः । तब्ह्यानपूजान्यासादि ज्ञेयं च द्वादशार्णवत् ॥१६०॥

रुद्र द्वारा उपासित मन्त्र—अब मैं रुद्रों द्वारा उपासित मन्त्र को कहता हूँ। नवग्रहों द्वारा उपासित मन्त्रों के ग्यारह बीजमन्त्र ही रुद्रों द्वारा उपासित हनुमान् का मन्त्र है। इस मन्त्र के ध्यान, पूजन, न्यास आदि सब कुछ द्वादशाक्षर मन्त्र के समान ही जानने चाहिये॥१५९-१६०॥

हनुमदष्टादशाक्षरमन्त्रकथनम्

सम्प्रवक्ष्यामि मन्त्रमष्टादशाक्षरम्। अथान्य प्रोच्य आञ्जनेयाय भगवते संवदेत् ॥१६१॥ मुनिरस्येश्वरः स्वाहेति महाबलाय स्मृत: । हनुमान्हं च बीजकम्। छन्दोऽ**नुष्टु**ब्देवता स्वाहा शक्तिश्चाञ्चनेयो रुद्रमूर्तिः सुरो अग्निगभी रामदूतो ब्रह्मास्त्रविनिवारकः। तथाङ्ग्छादिषु षडङ्गानि न्यसेत् ॥१६३॥ द्विरावृत्त्या हृदये विहिताञ्जलिम् । तप्तकाञ्चनसङ्काशं किरीटिनं कुण्डलिनं ्ध्यायेद्वानरनायकम् ॥१६४॥

हनुमान् का अष्टाक्षर मन्त्र—अब मैं हनुमान् के अन्य अष्टादशाक्षर मन्त्र को कहता हूँ। वह मन्त्र है—नमो भगवते आञ्जनेयाय महाबलाय स्वाहा। इस मन्त्र के ऋषि ईश्वर, छन्द अनुष्ठुप्, देवता हनुमान्, बीज हं एवं शक्ति स्वाहा कहे गये हैं। रुद्रमूर्ति आञ्जनेय देव कहे गये हैं। अग्निगर्भ, रामदूत एवं ब्रह्मास्त्रविनिवारक की दो आवृत्ति से इसका करन्यास एवं षडङ्गन्यास किया जाता है (अग्निगर्भ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, रामदूतः तर्जनीभ्यां नमः, ब्रह्मास्त्रनिवारकः मध्यमाभ्यां नमः, अग्निगर्भ अनामिकाभ्यां नमः, रामदूतो किनिष्ठकाभ्यां नमः, ब्रह्मास्त्रविनिवारक करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। अग्निगर्भों हृदयाय नमः, रामदूतः शिरसे स्वाहा, ब्रह्मास्त्रविनिवारकः शिखायै वषट, अग्निगर्भों कवचाय हुं, रामदूतो नेत्रत्रयाय वौषट, ब्रह्मास्त्रविनिवारक अस्त्राय फट्र)।

उक्त प्रकार से न्यास करने के उपरान्त तप्त स्वर्ण-सदृश कान्तिमान, हृदय पर हाथ जोड़े हुये, किरीट-कुण्डल धारण किये हुये किपश्रेष्ठ का ध्यान करना चाहिये॥१६१-१६४॥

पजयेत्पीठे द्वादशाणींक्तवर्त्मना। वैष्णवे अयुतं प्रजपेन्मत्रं दशांशं जुहुयात्तिलै: ॥१६५॥ प्राग्वित्सद्धो भवेन्मनुः । विप्रसन्तर्पणाद्यं त जितेन्द्रियो नक्तभोजी प्रत्यहं साष्टकं जपित्वा क्षद्ररोगेभ्यो मुच्यते दिवसत्रयात् ॥१६६॥ भूतप्रेतिपशाचादिनाशायैवं समाचरेत्। महारोगनिवृत्त्यै त्रिदिनं जपेत् ॥१६७॥ सहस्रं त यताशनोऽयुतं नित्यं जपेब्ह्यायन् कपीश्वरम्। विनिघ्नन्तमचिराज्जयति राक्षसौघं द्विष: ॥१६८॥ सुग्रीवेण समं रामं मेलयन्तं स्मरन् कपिम्। प्रजप्यायुतमात्रं तु सन्धि कुर्याद्विरुद्धयोः ॥१६९॥ लङ्गां दहन्तं तं ध्यायेदयुतं प्रजपेन्मनुम् । प्रदहेद् **ग्रामानचिरादेव** शत्रुणां साधकः ॥१७०॥ ध्यायन् हनुमन्तं मनुं जपेत्। प्रयाणसमये यो याति सोऽचिरात्स्वेष्टं साधयित्वा गृहं व्रजेत् ॥१७१॥ सदा गेहे पुजयेज्जपतत्परः । कपीशं आयुर्ल्लक्ष्म्यः प्रवर्धन्ते नश्यन्त्युपद्रवाः ॥१७२॥ तस्य

द्वादशाक्षर मन्त्र में उक्त रीति से वैष्णव पीठ पर इनका यजन करने के बाद प्रकृत मन्त्र का दस हजार जप करके तिलों से कृत जप का दशांश (एक हजार) हवन करने के उपरान्त पूर्ववत् ब्राह्मणों को सन्तुष्ट आदि करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

जितेन्द्रिय एवं रात्रिभोजी रहकर तीन दिनों तक प्रतिदिन मन्त्र का एक सौ आठ बार जप करने से क्षुद्र रोगों से मुक्ति मिल जाती है। भूत-प्रेत-पिशाच आदि के विनाश-हेतु भी इसी प्रकार मन्त्रजप करना चाहिये। महारोग की निवृत्ति के लिये तीन दिनों तक प्रतिदिन मन्त्र का एक हजार जप करना चाहिये।

प्रतिदिन संयत आसन पर विराजमान होकर राक्षसों का विनाश करते हुये हनुमान् का ध्यान करके मन्त्रजप करने वाला साधक शीव्र ही अपने शत्रुओं को जीत लेता है।

सुग्रीव से राम का मिलन कराते हुये किंप का स्मरण करके मन्त्र का दस हजार जप करने मात्र से ही विरोधियों में सन्धि हो जाती है।

लंका-दहन करते हुए हनुमान् का ध्यान करके मन्त्र का दस हजार जप करने वाला साधक शीम्र ही शत्रु के गाँवों को जला डालता है। जो व्यक्ति यात्रा करते समय हनुमान् का ध्यान करते हुये मन्त्रजप करता है, वह अपने अभीष्ट कार्य को शीघ्र ही सम्पादितं करके घर वापस आ जाता है।

जो सदा-सर्वदा अपने घर में हनुमान् का पूजन एवं जप करता है, उसकी आयु एवं लक्ष्मी की वृद्धि होती है तथा उपद्रवों का विनाश होता है॥१६५-१७२॥

हनुमदष्टाक्षरमन्त्रकथनम्

अथान्यं सम्प्रवक्ष्यामि मन्त्रमष्टाक्षरं परम्। प्रणवेनैव सम्पुटा ॥१७३॥ षड्दीर्घयुक्ता हल्लेखा अष्टार्णोऽयं हनुमतो मन्त्रराजः प्रकीर्तितः । षड्दीर्घयुक्तबीजेन षडङ्गविधिरीरितः ॥१७४॥ षड्दीघेयुक्तबाजन षडङ्ग ध्यानपूजाजपाद्यत्र सर्वं स्याद् द्वादशार्णवत्। चाधिव्याधिविवर्जित: ॥१७५॥ एतत्प्रभावाज्झटिति शार्दुलतस्करादिभ्यो न भयं जपतो मनुम्। प्रस्थानकाले जपतां नश्येयुस्तस्करादयः ॥१७६॥ कोकिलच्छदलेखन्या त्वलक्तकरसेन अष्टगन्थैर्लिखेद्रूपं कपिराजस्य सुन्दरम् ॥१७७॥ तन्मध्ये चाष्टकोणेषु शत्रुनाम पुनर्लिखेत्। तन्मन्त्रजपितं यन्त्रं दध्याच्छिरसि भूमिप: । जयत्यरिगणान् सर्वान् दर्शनादेव निश्चितम् ॥१७८॥ यद्वा जिगीषुर्नृपतिः पूर्वोक्तं लेखयेद् ध्वजे। ध्वजमादायोपरागे संस्पर्शान् मोक्षणावधि ॥१७९॥ हुतं मातृकाः प्रजपेत्पश्चाद्दशांशेन चरेत्। सर्वपैस्तिलसम्मिश्रै: संस्कृते हव्यवाहने । गच्छेद्रणे ध्वजं दृष्ट्वा पलायन्तेऽरयोऽचिरात् ॥१८०॥

हनुमान् का अष्टाक्षर मन्त्र—अब मैं श्रेष्ठ अष्टाक्षर मन्त्र को सम्यक् रूप से कहता हूँ। वह मन्त्र है—ॐ हां हीं हूं हैं हीं हः ॐ। यह अष्टाक्षर मन्त्र हनुमान् का मन्त्रराज कहा गया है। छः दीर्घ-युक्त बीजमन्त्र (हां हीं हूं हैं हों हः) से इसका षडङ्गन्यास कहा गया है। इसका ध्यान, पूजन, जप आदि सबकुछ द्वादशाक्षर मन्त्र के समान होते हैं। इसके प्रभाव से मनुष्य शीघ ही आधि-व्याधियों से रहित हो जाता है। इस मन्त्र का जप करने वाले को सिंह-व्याघ्र, चोर आदि का भय नहीं रहता। यात्रा करते समय इसका जप करने से मार्ग-स्थित चोर आदि नष्ट हो जाते हैं।

कोयल के पँख की लेखनी बनाकर अष्टगन्ध और आलता के घोल से हनुमान् की सुन्दर प्रतिमा बनाकर उसके मध्य में अष्टकोण की रचना करके उस अष्टकोण में शात्रु का नाम लिखकर मन्त्रजप करने के उपरान्त उस यन्त्रराज को मस्तक पर धारण करने वाला राजा दर्शन-मात्र से ही समस्त शात्रुओं को जीत लेता है। अथवा विजयेच्छु राजा को चाहिये कि पूर्वोक्त यन्त्र को ध्वज पर लिखकर ग्रहणकाल में स्पर्श से मोक्ष-पर्यन्त उस ध्वज को लेकर मातृकाओं का जप करके सरसो एवं तिल के मिश्रण से संस्कृत अग्नि में कृत जप का दशांश हवन करके रणक्षेत्र में जाय तो उस ध्वज को देखकर शत्रुगण शीघ्र ही युद्धभूमि से भाग खड़े होते हैं॥१७३-१८०॥

प्लीहादिनिवारकहनुमन्मन्त्रकथनम्

सम्प्रवक्ष्यामि मन्त्रं प्लीहादिवारणम् । हां हुं हुनुमते हुच्च ङेऽन्तं किपपतिं ततः ॥१८१॥ वगविंग अंआंप्रोच्य प्लीहं हुं चापि दं वदेत्। जिनमिताणोंऽयं मुन्यादि द्वादशार्णवत् ॥१८२॥ प्लीहयुक्तोदरे स्थाप्यं नागवल्लीदलं नूतनेन पटेनाच्छादयेत्ततः ॥१८३॥ गदं दुष्टं वंशजं शकलं तस्य जठरे स्थापयेद् बुधः। ज्वलद्वह्रौ यश्चैवं त्रिः प्रतापयेत् ॥१८४॥ तदादाय बदरीतरुसम्भूतसमिधा मनुनामुना। जिपतेनैवं सप्तशो ताडयेज्जठरास्थितम् । सप्तकृत्वस्ततो मन्त्री शकलद्वितयं खलु ॥१८५॥ नश्यत्येव न एवं कृते प्लीहरोगो संशय: । चैवमेव दक्षपार्श्वे यकृद्वद्धौ समाचरेत् ॥१८६॥

प्लीहादि-निवारक हनुमन्मन्त्र—अब मैं प्लीहा आदि का निवारण करने वाले हनुमान् के मन्त्र को कहता हूँ। चौबीस अक्षरों का यह मन्त्र है—हां हुं हनुमते नम: कपिपतये वगविग अं आं प्लीहं हुं दह। इस मन्त्र के ऋषि आदि द्वादशाक्षर मन्त्र के समान कहे गये हैं।

प्लीहा-युक्त उदर पर पान के पत्ते को रखकर उस दुष्ट रोग को नूतन वस्न से आच्छादित करने के बाद उस पर बाँस के टुकड़े को रखने के बाद उनमें से एक टुकड़े को लेकर प्रज्ज्वित अग्नि में तीन बार तप्त करना चाहिये। इसके बाद बेर की सिमधा को इस मन्त्र के सात जप से अभिमन्त्रित करके उससे सात बार उदर पर ताड़न करना चाहिये। इसी प्रकार बाँस के दो टुकड़ों से भी करना चाहिये। ऐसा करने से प्लीहा रोग

निश्चित ही नष्ट हो जाता है। यकृत् वृद्धि की दशा में भी इसी प्रकार दक्ष पार्श्व में करना चाहिये।।१८१-१८६।।

अथान्यं सम्प्रवक्ष्यामि मालामन्त्रं वदेद् ध्रुवम्। वदेत्कपिलपिङ्गल ॥१८७॥ वज्रतुण्ड वज्रकाय ऊर्ध्वकेश महावीर स्रक्तमुख कीर्तयेत्। तडिज्जिह दंष्ट्रोत्कट कहद्वयम् ॥१८८॥ महारौद्र करालिने महादृढप्रहारिन्निति कीर्तयेत्। महासेतुपदं लंकेश्वरवधायान्ते । ततः ॥१८९॥ महाशैलप्रवाह बन्धान्ते गगनेचर। च एह्येहि प्रोच्य भगवन् महाबलपराक्रम ॥१९०॥ भैरवाज्ञापय प्रोच्य एह्येहीतिपदं महारौद्रपदं प्रोच्य दीर्घपुच्छेन वेष्टय ॥१९१॥ वैरिणम्भञ्जयद्वन्द्वं ध्रुवादिकः । हुंफट् चायं मालामन्त्रोऽखिलेष्टदः ॥१९२॥ बाणनेत्रेन्द्वणींऽत्र एवमाराधयन् रुद्रस्यैकादशस्य प्रोक्तं परम्प्रवक्ष्यामि कार्तवीर्यार्जुनस्य अतः च ॥१९३॥

> इति श्रीमहामायामहाकालानुमते मेरुतन्त्रे शिवप्रणीते हनुमन्मन्त्रकथनं नाम चतुस्त्रिशः प्रकाशः॥३४॥

अन्य मालामन्त्र—अब मैं दूसरे मालामन्त्र को कहता हूँ। एक सौ पैंतीस अक्षरों का समस्त अभीष्ट-प्रदायक वह मन्त्र इस प्रकार है—ॐ वज्रकाय वज्रतुण्ड किपल पिङ्गल ऊर्ध्वकेश महावीर सुरक्तमुख तिडिज्जिह्न महारौद्र दंष्ट्रोत्कट कह-कह करालिने महादृढ़प्रहारिन् लङ्केश्वरवधाय महासेतु बन्ध महाशैलप्रवाह गगनेचर एह्येति भगवन् महाबलपराक्रम भैरवाज्ञापय एह्येहि महारौद्र दीर्घपुच्छेन वेष्टय वैरिणं भञ्जय-भञ्जय हुं फट्। इस मन्त्र के आराधन से ही एकादश रुद्रों की आराधना हो जाती है। अब इसके बाद मैं कार्तवीर्यार्जुन के श्रेष्ठ मन्त्र को कहूँगा।।१८७-१९३।।

इस प्रकार श्रीमहामाया महाकालानुमत मेरुतन्त्र में शिवप्रणीत 'हनुमन्मन्त्रकथन'-नामक चतुस्त्रिंश प्रकाश पूर्णता को प्राप्त हुआ।